पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 1.3.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

महर्षि दयानन्द सरस्वती

के 189वें जन्मदिवस पर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली

को 251/- रूपये

दान देकर पुण्य के भागी बनें।

-डा.अनिल आर्य,राष्ट्रीय अध्यक्ष

वर्ष-29 अंक-19 फाल्गुन-2069 दयानन्दाब्द 190 1 मार्च से 15 मार्च 2013 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 1.3.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

पाकिस्तान दूतावास पर हिन्दु महिलाओं के अपहरण व धर्मान्तरण के विरूद्ध प्रदर्शन

अल्पसंख्यक हिन्दुओं को सुरक्षा दी जाए-**आर्य नेता अनिल आर्य का आह्वान**

नई दिल्ली । रविवार, 24 फरवरी 2013, हूमन राइट्स इन्टरनेशनल के तत्वावधान में पाकिस्तान दूतावास, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली पर विशाल प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारी तीन मूर्ति चौक पर इकट्ठे हुए, प्रदर्शकारी नारे लगा रहे थे कि ''पाकिस्तान में हिन्दु महिलाओं के अपहरण व धर्मपरिवर्तन बंद करो, पाकिस्तान होश में आओ''। उल्लेखनीय है कि हिन्दु लड़की रिंकल कुमारी पीछे एक वर्ष से लापता है लेकिन सरकार ने कोई कार्यवाही नही की है। अनेको हिन्दु लड़कियों का अपहरण किया जा रहा है। पाकिस्तान सरकार को ज्ञापन भी दिया जाए।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई जी, श्री राम कुमार सिंह, श्री सन्तोष शास्त्री, श्री दिनेश आर्य, श्री विकास कुमार, कै. अशोक गुलाटी आदि उपस्थित थे। धरने के संयोजक श्री राजेश गोगना (एडवोकेट) ने कहा कि पूरे विश्व में यदि कहीं भी हिन्दुओं पर अन्याय होगा हम चुप नहीं बैठेंगे। श्री ओम प्रकाश त्रेहन, श्री एम.एन. कृष्णा, श्री गोपाल अग्रवाल, श्री प्रिया दर्शी दत्त आदि ने अपने विचार रखें।

आर्य समाज जनकपुरी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

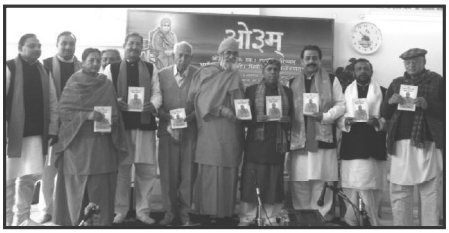

रविवार 24 फरवरी 2013, आर्य समाज बी ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली का वार्षिक उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. सुन्दर लाल कथुरिया की पुस्तक ''शून्य से शिखर तक'' का लोकार्पण करते डॉ. अनिल आर्य, साध्वी उत्मायति, डॉ. सुन्दर लाल कथुरिया, श्री एस.एल. कोहली, श्री महेन्द्र भाई, श्री राम कुमार सिंह, श्री केवल कृष्ण कपानिया, श्री सन्तोष शास्त्री, आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री आदि। प. सहदेव सरस के मधुर भजन हुए। आचार्य योगेन्द्र शास्त्री ने भूमिका प्रस्तुत की।

स्वतंत्रता सेनानी श्री रामशरण आर्य को श्रद्धांजलि

रविवार 24 फरवरी 2013, करनाल सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री राम शरण आर्य का 102 वर्ष की आयु में निधन हो गया। इस अवसर पर डॉ. अनिल आर्य अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, आचार्य बाल कृष्ण जी (पांतञ्जलि, हरिद्वार) श्री अरविन्द शर्मा (सांसद), श्री आई.डी. स्वामी (पूर्व गृह मंत्री, भारत), श्री वेद पाल (पूर्व अध्यक्ष हरियाणा, विधान सभा), डॉ. सर्वदानन्द आर्य, प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार आदि गणमान्य व्यक्तियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। पूरे राष्ट्रीय सम्मान के साथ अन्तिम संस्कार किया गया।

उल्लेखनीय है कि उनके पुत्र डॉ. जयदीप आर्य, परिषद् के प्रान्तीय मन्त्री एवं अध्यक्ष, हरियाणा रह चुके है तथा इस समय पांतञ्जलि में प्रभारी है। दूसरे पुत्र श्री हरेन्द्र चौधरी परिषद् के करनाल शाखा के मन्त्री है। इनके चाचा श्री सत्यप्रकाश आर्य दिल्ली आर्य समाज, विशाखा एन्कलेव के प्रधान है। परिषद् की ओर से महान स्वतंत्रता सेनानी को विनम्र श्रद्धांजलि।

पं. लेखराम बलिदान दिवस

अमर शहीद पं. लेखराम बलिदान दिवस बुधवार 6 मार्च को सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक उनकी बलिदान स्थली कादियां, गुरदासपुर, पंजाब में मनाया जा रहा है।

इष्टमित्रों सहित अधिक-अधिक से संख्या में पहुंचे।

23 मार्च शहीद दिवस पर जन्तर मन्तर चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली

के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव

के

82 वें बलिदान दिवस पर

राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी सम्मेलन

शनिवार, 23 मार्च 2013,

प्रात: 10 से 1.30 बजे

स्थान: जन्तर मन्तर रोड़,नई दिल्ली।

आप इष्टमित्रें सहित अधिक से अधिक सख्या में पहुंचे।

-डा.अनिल आर्य,राष्ट्रीय अध्यक्ष

'विवाहों के अप्रसांगिक रीति-रिवाज और उन पर भारी व्यय'

मनमोहन कुमार आर्य

आज के आधुनिक युग में विज्ञान द्वारा नित्य प्रति नई-नई चीजों की खोज की जा रही है जिनसे नये पदार्थ व आवश्यकता की उपयोगी चीजें बनती हैं जिन्हें गृहस्थी अपनी दैनन्दिन सुविधा के लिए अपनाते हैं। फिर इन उत्पादों के निर्माता इनकी बिक्री बढ़ाने के नाना प्रकार के उपायों से इसका प्रचार व प्रसार करते हैं। इनको अपनाकर न केवल हमारे दैनन्दिन जीवन में हमारा व्यय ही बढ़ता है अपितु हमारा बहुमूल्य समय भी इन वस्तुओं के विक्रय, प्रयोग व रखरखाव में व्यतीत हो जाता है। इसी कारण जीवन के बहुत से आवण्यक कार्य यथा स्वाध्याय, साधना, सेवा, परोपकार आदि छूट जाते हैं या इन पर पर्याप्त समय नहीं दिया जा पाता। बहुत से लोग आर्य समाज को जानते, मानते व इसके अनुयायी हैं परन्तु उनसे यदि पूछें कि क्या वह नियमित रूप से सन्ध्या, हवन, पितृ यज्ञ, स्वाध्याय व साधना आदि वैदिक नित्य कर्मो व कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं तो शिकायत मिलती है कि समयाभाव एवं महंगाई के कारण इन कार्यो को करने में मुख्य बाधा है जिससे इन दैनिक वैदिक कर्तव्यों को नहीं कर पाते हैं। हमें अपने परिवारों में यथा समय व अवसरों पर अपने युवा सन्तानों के विवाह आदि कार्यो को करना पड़ता है। आज के समय में विवाह का सम्पादन अनेक बड़े कार्यो में सम्मिलित है जिन पर प्रभूत व्यय होता है। आवास निर्माण एवं बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की तरह विवाह का सम्पादन भी अति व्यय साध्य है। कई लोग साधनों की कमी के कारण विवाह व्यय से या तो भारी कर्जदार हो जाते हैं या फिर इन कार्यो को कर ही नहीं पाते।

विवाह आदि कार्यो पर भारी व्यय क्यों किया जाता है?क्या किए जाने वाले सब कार्यो को करने का शास्त्रों में विधि-विधान एवं उपयोगिता है या अपने अज्ञान व प्रचलित कुरीतियों की देखा-देखी करते हैं?जहां तक हमारा अध्ययन है, शास्त्रों में तो केवल विवाह क्या है, क्यों किया जाता है और विवाह संस्कार के विधि विधान क्या है, केवल इन्हीं बातों पर प्रकाश डाला गया है। विवाह संस्कार के विधि विधान को पुरोहित या विद्वान आचार्य द्वारा मात्र 2-3 घंटे में सम्पन्न कराया जाता है। यह संस्कार का कार्य ही मुख्य है एवं इसका किया जाना विवाह का होना और इसका न होना विवाह का न होना होता है। एतदर्थ संस्कार में प्रयुक्त द्रव्यों एवं पुरोहितजी की दक्षिणा पर कुछ व्यय होता है जो कि धनी व निर्धन सरलता से कर सकते हैं। यज्ञ के द्रव्यों में हवन सामग्री, घृत, मधु, दही, वर-वधु के वस्त्र और वह भी सामान्य व वैदिक संस्कृति के अनुरूप ही होते हैं। जिन कार्यों पर आजकल अधिक व्यय किया जा रहा है वह हैं, किसी होटल आदि में धूमधाम से सगाई के नाम पर भारी व्यय करना, होटल या वैडिंग प्वाइण्ट का किराया, प्रीतिभोज में बड़ी संख्या में अनेक प्रकार के व्यजंन व पकवान बनवाना, भारी भरकम साज-सज्जा करना, वर-वधू व परिवार वालों की महगीं वेशभूषायें, वधू के स्वर्णाभूषण व वर पक्ष के निकट सम्बन्धियों को स्वर्णाभूषण एवं महगें वस्त्रों को देना, नगद धनराणि वर पक्ष की मांग होने पर देना, वर-पक्ष की मांग होने या स्वयं ही घर, फ्लैट, भूमि का टुकड़ा, कार देना, अनावश्यक बैण्ड-बाजा, ढोल आदि बजवाना व लोगों को शराब पिलाना, आदि कार्य हैं जो हमारी दृष्टि में अनावश्यक हैं। इन पर किया जाने वाला व्यय अपव्यय है जो समाज में परम्पराओं व संस्कृति को विकृत करता है एवं भ्रष्टाचार व गलत कार्यो को बढ़ावा देने के साथ समाज में विषमता पैदा करता है। इन कार्यों के करने से कुछ समय की वाहवाही अवश्य होती है परन्तु बाद में मध्यम व निम्न वर्गीय परिवारों को आर्थिक तंगी के कठिन दौर से गुजरना पड़ता है जिसका परिवार की सुख-शान्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस पर भी कोई गारण्टी नहीं कि वर-वधु का वैवाहिक जीवन व दाम्पत्य सम्बन्ध मधुर व शास्त्र अनुमन्य होगें तथा दोनों परिवारों में परस्पर समरसता होगी। यदि विवाह में किए जाने वाले अनावश्यक कार्य व व्यय न किए जायें और जो धन आसानी से व्यय किया जा सकता है, वह वर वधु के जीवन को सुस्थापित करने वा बाद में बच्चों की शिक्षा व अन्य कार्यो के लिए बैंक आदि में जमा करा दिया जाये तो इससे वर वधु को कहीं अधिक लाभ हो सकता है। बैंक में जमा किया धन का राष्ट्रीय कार्यो में उपयोग होता है जिससे देश शक्तिशाली बन सकता है। कुछ बुद्धि वर्ग के लोग ऐसा करते भी हैं परन्तु ऐसे लोगों की संख्या अत्यल्प होने के कारण समाज पर इसका अनुकूल प्रभाव नहीं हो रहा है। इसका एक प्रमुख कारण समाज का अज्ञान, कुरीतियों, कुसंस्कारों व अन्धविश्वासों से पल्लिवित व पोषित होना व वेदों के विपरीत आचरण है। यदि किसी विवाह में कोई निकट का समझदार संबंधी इन अनावण्यक कार्यों के विरूद्ध टीका-टिप्पणी करता है तो उसे बुरा माना जाता है और वह सबकी आलोचनाओं का केन्द्र बन जाता है। परिवार के सभी छोटे-बड़ें उसकी आलोचना कर उसे अनुचित ठहराते हैं और जो लोग मूकदर्शक बन कर उसे देखते रहते हैं, वह सम्मानीय व समझदार माने जाते हैं।

विवाह संस्कार की पूरी रीति व विधि क्या हो, इस पर विचार करना प्रासंगिक है। सर्वप्रथम तो वर व वधु के विवाह का प्रस्ताव एक दूसरे परिवार को पहुंचने का मुख्य कार्य है। इसके लिए दोनों पक्षों के परिवार प्रयास कर उसे वर्तमान पद्धति से हल कर सकते हैं। विवाह संबंध को निश्चित करने के लिए दोनों पक्षों के वरिष्ठ व बुद्धिमान लोग मिलकर उस वैवाहिक संबध के गुण-दोष व उसके उपयुक्त व अनुपयुक्त होने पर विचार करें। यदि उपयुक्त लगे तो कन्या व युवक को उसके बारे में बतायें व उनकी सम्मति प्राप्त करें। कन्या व युवक की सम्मति प्राप्त होने पर दोनों पक्ष एक दूसरे के कुल, व्यवहार व सामाजिक जीवन, मान, प्रतिष्ठा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें। यदि सब कुछ अनुकूल पड़े, तो भावी वर-वधु का वार्तालाप कराकर उसके पश्चात परस्पर की सुविधानुसार कोई तिथि निश्चित करें और दोनों के लिए सुविधाजनक स्थान पर विवाह का आयोजन करें। किसी एक स्थान पर जहां दोनों पक्षों के लोग एकत्रित हो सकते हैं और उनके भोजन व आवास आदि की व्यवस्था हो सकती है, वहां दिन में लगभग 4-5 बजे अपरान्ह एकत्रित हों। वैवाहिक आयोजन में उपस्थित प्रमुख व्यक्तियों का शिष्टाचार एवं स्वागत कर दोनों पक्षों के मुख्य सम्बंधियों आदि का परिचय दिया जाये। इस अवसर पर आवश्यकतानुसार जलपान की व्यवस्था की जा सकती है। आपसी परिचय का यह कार्य पुरोहित व दोनों पक्षों के योग्य पुरूष व स्त्री कर सकते हैं। वहीं पुरोहितजी वर व वधु का विवाह संस्कार आरम्भ करा दें जो गोधूलि वेला में चलकर शीघ्र समाप्त हो जाये। अनुमानत: विवाह संस्कार सायं 7.00 से 7.30 बजे के बीच समाप्त हो जायेगा। उसके बाद उसी स्थान पर भोजन कक्ष में प्रीतिभोज आरम्भ किया जा सकता है। भोजन समाप्त कर सभी लोग वर वधु से मिलकर उनको अपनी शुभकामनायें और आशीर्वाद दे कर जा सकते हैं और वर व वधु पक्ष के लोग व संबंधी भी स्वगृहों वा विश्राम के स्थानों पर जाकर शयन कर सकते हैं। यदि विवाह को दोपहर में समाप्त करना हो तो फिर यह सब आयोजन 10 बजे पूर्वान्ह से आरम्भ कर इसे दोपहर 2.00 बजे तक समाप्त किया जा सकता है। विवाह में सम्मिलित आमंत्रित लोग यदि चाहें तो वर-वधु को सस्ते, उपयोगी व अच्छे उपहार या कुछ नगद धनराणि दे सकते हैं। इस अवसर पर वर व वधु पक्ष अपनी शक्ति व सुविधा के अनुसार कुछ धनराणि नव-दम्पति के बैंक खातें में लम्बी अवधि के लिए जमा कर सकते हैं जिससे भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर काम आये। यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि इसमें वर पक्ष का वधु पक्ष पर कहीं कोई प्रेरणा व दबाव न हो। विवाह स्थल पर यदि चाहें तो संगीत आदि का आयोजन हो सकता है परन्तु उसका प्रभाव सात्विक होना चाहिये। इस अवसर पर किसी प्रकार से मद्यपान करना व पुरूषों व स्त्रियों का सड़कों पर बारात के रूप में या विवाह स्थल पर शोर शराबे वाले फिल्मी गीतों के साथ नृत्य करना अनुचित एवं आपत्तिजनक है। यह अपसंस्कृति एवं मर्यादाओं का हनन है जिसका सभी बुद्धिमान स्त्री-पुरूषों को विरोध करना चाहिये। हमारा यह भी विचार है कि इस अवसर पर विवाह संस्कार के आरम्भ होने से कुछ समय पूर्व किसी योग्य विद्वान का प्रवचन का आयोजन भी किया जा सकता है जिसमें वह प्रभावणाली ढंग से विवाह की व्याख्या कर वैवाहिक जीवन में पति व पत्नी के कर्तव्य पर सारगर्भित प्रकाण डाले। वक्ता महानुभाव अपने व्याख्यान में आज के रीतिरिवाजों की खामियों को भी अपने प्रवचन के विषय में सम्मिलित करें और उसमें उन बिन्दुओं पर मुख्य रूप से प्रकाण डाले जिन बातों को लेकर समाज में आलोचना या विरोध किया जा सकने की सम्भावना हो जिससे बाद में किसी को आलोचना का अवसर न मिल सके। सामूहिक भोज में इस बात का विशेषरूप से ध्यान रखा जाये कि भोजन सात्विक व स्वास्थ्यप्रद हो वा सीमित संख्या में व्यंजन बनाये जायें जिससे अधिक आर्थिक बोझ वर या वधू पक्ष पर न पड़े। यह बहुत ही आवश्यक है कि विवाह के उपलक्ष्य में किसी भी प्रकार से मद्यपान का आयोजन नहीं किया जाना चाहिये। संगीत के नाम पर आजकल जो आरकेस्ट्रा आदि का प्रयोग कर फिल्मी गीतों को तेज ध्वनि से सुना जाता है व डांस किया जाता है, वह हमारे धर्म व संस्कृति से विपरीत कार्य है जो कि नहीं होना चाहिये। जो लोग ऐसा करते हैं उन्हें विचार कर लेना चाहिये अथवा वैदिक विद्वानों से पता कर लेना चाहिये कि जो रजो व तमोगुण प्रधान कार्यकलाप किए जाते हैं, उनके दुष्परिणाम भविष्य में क्या-क्या हो सकते हैं। हमारा स्वाध्याय व चिन्तन करने के बाद यह परिणाम सामने आया है कि आजकल के तामझाम पूर्ण तरीकों से विवाह करने से मनुष्य की आर्थिक स्थिति खराब होती है। समाज में एक गलत उदाहरण बनता है जिससे मध्यम व अल्प आय वालों के लिए कठिन समस्यायें आती हैं। उसके साथ आध्यात्मिक दृष्टि से उनका यह कार्य शुभ कर्म न होकर, अधिक अशुभ न सही, परन्तु होता अशुभ ही है। हम जानते हैं कि हमारी इन पंक्तियों को लिखने का कोई विशेष प्रभाव समाज पर पड़ने वाला नहीं है क्योंकि आज का समाज रजो व तमों गुणों से परिपूर्ण अज्ञान, कुरीति व अन्ध विश्वासों पर आश्रित है। हमारा कर्तव्य इन पंक्तियों को लिखने के लिए हमें प्रेरित कर रहा है। हमारा अनुमान है कि समाज में ऐसे बहुत से लोग देखे जाते हैं जो विवाह में होने वाले अनावण्यक कार्य एवं व्यय की चर्चा तो करते हैं परन्तु इस पर कुछ ठोस नहीं कर पाते। ऐसे लोगों को यह प्रयास अच्छा लगेगा और पता नहीं किसी को इन पंक्तियों से कोई अन्य लाभ भी हो सकता है।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि यदि विवाहों का वर्तमान खर्चीला स्वरूप जारी रहा तो इसका समाज पर बहुत बुरा असर होगा। आज भी विवाहों के व्ययसाध्य आयोजन से समाज में नाना प्रकार की समस्यायें व विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं जिनका उपचार अनावण्यक खर्चीलें कार्यो को बन्द करके ही किया जा सकता है। ऐसा होने पर समाज के लोग अपनी सन्तानों के विवाह हेतु धन जुटाने के लिए अनुचित कार्य नहीं करेगें और न ही मानसिक तनाव में रहेगें। गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित योग्य सन्तानों का सरल व आज भी प्रासंगिक वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न होने पर वर-वधु का भावी जीवन सुखद एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत हो सकता है। हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि आज यह बात सभी के समझने की है कि हमें अपनी शारीरिक व वित्तीय सामर्थ्य बढ़ानी चाहिये जो कि शुद्ध विचारों, व्यायाम, स्वास्थ्यप्रद भोजन, पुरूषार्थ से धनोपार्जन, घरेलू कार्यो में कम व्यय के मूल मन्त्र को अपनाकर ही सफल हो सकते हैं। अखाद्य पदार्थो यथा मद्य, मांस, तला हुआ व अधिक संख्या में पकवानों व व्यंजन के प्रयोग से स्वास्थ्य को हानि होनी निश्चित है। विवाहों के अवसरों पर बाजारों, सड़कों व वैवाहिक स्थलों पर बाल-युवा व वृद्ध स्त्रियों को पुरूषों के साथ नृत्य या डांस कदापि नहीं करना चाहिये, इससे नैतिक पतन के साथ हमारा सांस्कृतिक पतन होना भी निश्चित है। वैदिक संस्कृति संसार की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। वह ऐसे कृत्य करने की कदापि अनुमति नहीं देती। इससे चारित्रिक गिरावट भी आती है एवं इसके अनेक दष्परिणाम भी होते हैं। हमारा निजी अनुभव है कि विवाहों में मद्यमान कर स्त्री पुरुषों के साथ डांस करने से कई बार तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो जाती है और वहां हिंसा आदि की सम्भावना बनती है जिसे उपर्युक्त प्रकार से विवाह आयोजित करके दूर किया जा सकता है। हम समाज के सभी वर्गो के बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह शान्त मन से इस लेख में प्रस्तुत बातों पर विचार करें और उचित को अपनायें और अनुचित को तत्काल छोड़ दे।

-1096/261 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

'मृत्यु के भय से मुक्ति'

गतांक से आगे **मनमोहन कुमार आर्य**

यह जानकर ईश्वर भक्ति की लगन नहीं लगेगी और मृत्यु का दुःख दूर नहीं होगा? इस मार्ग पर चलते हुए जब मृत्यु आती है तो वह ईश्वर में स्वयं का ध्यान लगाकर सुख व दुःख से सर्वथा रहित हो जाता है। यह विश्लेषण बताता है कि ईश्वरोपासक का मृत्यु का दुःख तो दूर हो गया, अब तो आज और अभी से ईश्वरोपासना को जारी रखते हुए समाधि का आनन्द लेना है और जब मृत्यु आयेगी तो ईश्वर में ध्यानावस्थित होकर प्राण त्याग देने हैं। प्राण त्यागने व मृत्यु की इस अवस्था में व्यक्ति को कोई दुःख नहीं होगा यह विश्लेषण से सिद्ध है। उस स्थिति में अगला जन्म प्राप्त करने और ईश्वर का साक्षात्कार करने की जल्दी भी योगाभ्यासी या ईश्वरोपासक को हो सकती है जो कि मृत्यु पर विजय की सूचक है।

मृत्यु विषयक एक लौकिक उदाहरण महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का लेते हैं। अपने बाल्य काल में बड़ी बहिन व चाचा की मृत्यु से उनका मन आहत हुआ। इससे वह डर गये थे और उनके मन में विचार आया था कि एक दिन उनको भी मरना ही होगा?क्या मृत्यु से बचने की कोई औषध है?उसको खोजना चाहिये। इसकी खोज में ही वह घर से निकल पड़े। अनेक विद्वानों, संन्यासियों एवं योगियों के सम्पर्क में आकर उनको ईश्वर व उसके द्वारा प्रदत्त ज्ञान 'वेद' एवं वेद ज्ञान पर आधारित साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों के वेदानुकूल ज्ञान की प्राप्ति हुई। उससे उनका आत्मा अविद्या व समस्त क्लेशों से रहित होकर पूर्णतः सन्तुष्ट हो गया। आगे चल कर हम देखते हैं कि उन्होंने वेद प्रचार का अद्भूत व अद्वितीय कार्य किया। उनकी मृत्यु का दृश्य भी उल्लेखनीय बन गया। उनके द्वारा सत्य के प्रचार से चिढ़ कर उनके विरोधियों ने उन्हें विष दे दिया। मृत्यु अर्थात् प्राण छोड़ते समय उनके हाव-भाव या कथनों में किसी प्रकार का विषाद नहीं था। वह गम्भीर बने हुए थे। उन्होंने मृत्यु से पूर्व अपने अनुयायियों से दिन, वार व माह पूछा था। कार्तिक अमावस्या का दिन 30 अक्तूबर सन् 1883 ई. था और उस दिन दीपावली थी। ईश्वर से मिलने के लिए उन्होंने नाई को बुला कर क्षौर कर्म कराया और नये वस्त्र धारण किये। ईश्वरोपासना की और अन्त में ईश्वर से संवाद करते हुए कहा कि हे ईश्वर, तैने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो। इसके बाद उन्होंने लम्बा श्वांस लिया और प्राण छोड़ दिये। रोग के दिनों में उन के चेहरे पर कभी विषाद का कोई चिन्ह नहीं देखा गया। वह न निराश हुए न हताश। महाभारत काल के लगभग 5,000 वर्ष बाद ईश्वर के सच्चे स्वरूप का प्रचार करने वाले वह पहले व्यक्ति थे। असह्य पीड़ा होने पर भी न तो उन्होंने कभी हाय-हाय की और न किसी प्रकार की चीख-पुकार की और न ईश्वर के प्रति कोई शिकायत की। कह नहीं सकते कि विषपान और रोग की अवस्था में बिताये गये दिन क्या उनके किसी प्रारब्ध के कारण थे या यह ईश्वर की ओर से उनकी कोई कठिन अग्नि-परीक्षा थी। यदि परीक्षा थी तो स्वामी दयानन्दजी उसमें उत्तीर्ण हुए थे, ऐसी साक्षी उनकी मृत्यु की घटना से मिलती है। एक परम ईश्वर भक्त ही इस प्रकार स्वेच्छा से प्राण त्याग कर मृत्यु को गले लगा सकता है। स्वामीजी के जीवन की एक अन्य घटना लेते हैं।

जब स्वामी दयानन्द ने गुरू की उस अतार्किक पिटाई पर बुरा नहीं माना था तो उन्हें मृत्यु से पूर्व विषपान के कारण जो भयंकर पीड़ा हुई उसके लिए भी वह ईश्वर से क्या शिकायत करते? इससे पूर्व भी कई बार उनको विष दिया गया था और अनेक अवसरों पर लोगों ने उनके प्रति अपमानजनक कृत्य किए थे, पर उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं माना और ऐसा करने वालों का हमेशा कल्याण चाहा, अस्तु। विषमान की उस भयंकर पीड़ा को भीी उन्होंने मौन रह कर सहन किया परन्तु ईश्वर से इसकी कभी कोई कीी कोई शिकायत नहीं की। उन्होंने शायद यही सोचा होगा कि यह पीड़ा भी ईश्वर की कोई कृपा या फिर परीक्षा है।

स्वामीजी जब मथुरा में गुरू विरजानन्दजी से पढ़ते थे तो एक बार गुरू की कुटिया की सफाई करते हुए उन्होंने कूड़े को एक स्थान पर समेट कर रख दिया। सोचा कि कुछ देर बाद, अवकाश मिलने पर, इसे अन्यत्र फैंक दूगां। अनायास तभी गुरूजी उधर आ निकले तो उनका एक पैर उस कूड़े से जा लगा। गुरूजी के स्वभाव में कुछ क्रोध का अंश होता था। उन्होंने स्वामी दयानन्द को पुकारा और हाथ में एक छड़ी, जिसका आगे का भाग लोहे का था, उससे स्वामीजी की गलती पर प्रहार किया। उस प्रहार से स्वामीजी के शरीर पर घाव हो गये। गुरूजी के इस व्यवहार पर स्वामीजी ने उनसे करबद्ध होकर क्षमा प्रार्थना करते हुए कहा कि गुरूजी मेरा शरीर तो वज्र के समान कठोर है और आपके हाथ कोमल हैं। इससे आपको पीड़ा हुई होगी। इसके लिए गुरूजी अपने इस शिष्य को क्षमा करें। भविष्य में वह ध्यान रखेगें कि फिर उनसे ऐसी गलती न हो। घाव कुछ दिन बाद ठीक हो गया। दयानन्दजी के जीवन चरित में आता है कि भावी जीवन में जब कभी उनका ध्यान उस घाव के निशान पर चला जाता था तो उस घटना को याद कर वह गुरूजी की उनके प्रति जो कृपा, स्नेह और आशायें थी, उसे याद करके द्रवित हो जाते थे। यहां हमारा विचार है कि जब स्वामी दयानन्द ने गुरू की उस अतार्किक पिटाई पर बुरा नहीं माना था तो उन्हें मृत्यु से पूर्व विषपान के कारण जो भयंकर पीड़ा हुई उसके लिए भी वह ईश्वर से क्या शिकायत करते? इससे पूर्व भी कई बार उनको विष दिया गया था और अनेक अवसरों पर लोगों ने उनके प्रति अपमानजनक कृत्य किए थे, पर उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं माना और ऐसा करने वालों का हमेशा कल्याण चाहा, अस्तु। विषमान की उस भयंकर पीड़ा को भीी उन्होंने मौन रह कर सहन किया परन्तु ईश्वर से इसकी कभी कोई कीी कोई शिकायत नहीं की। उन्होंने शायद यही सोचा होगा कि यह पीड़ा भी ईश्वर की कोई कृपा या फिर परीक्षा है। इस घटना को याद कर भजन की यह पंक्तियां स्मृति पटल पर उभरती हैं, 'प्रभु जब कष्ट देता है तो घबराना नहीं चाहिये।' वस्तुतः महर्षि दयानन्दजी का जीवन धन्य था और हमें प्रसन्नता है कि वह हमारे और अपने अनुयायियों के आदर्श हैं। उन जैसा व्यक्ति सम्भवतः विश्व के इतिहास में दूसरा नहीं हुआ।

हम सब को एक न एक दिन मरना है। दुःख भी सबको कुछ न कुछ होगा ही। क्यों न हम मृत्यु के स्वरूप को जानकर मृत्यु पर विजय प्राप्त करें जैसी कि स्वामी दयानन्द जी ने की। इसके लिए हमें वेदों की शरण में जाना होगा जो बताते हैं कि योगाभ्यास कर ईश्वर को प्राप्त करो और सारे संसार से अज्ञान को दूर करो। इस मार्ग पर चल कर ही हमारा जीवन सफल होगा और हम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर पायेगें और मृत्यु का दुःख हमें विचलित नहीं कर पायेगा।

– 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

हरिद्वार आनन्दधाम में योग साधना शिविर

वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के पावन सान्निध्य में वैदिक योग आश्रम, हरिपुर कलां, हरिद्वार में दिनांक 17 मार्च से 21 मार्च 2013 तक ''योग साधना शिविर'' आयोजित किया जा रहा है । इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें:- फोन:09313989311,09818894376

श्री प्रियव्रत आर्य पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2, नई दिल्ली के चुनाव में श्री प्रियव्रत आर्य-प्रधान, श्री सहदेव नागिया-मन्त्री व श्री एस.के.कोहली-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए, तदर्थ हार्दिक बधाई।

जम्मु पत्निटाप में योग साधना शिविर

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के सान्निध्य में ''योग साधना शिविर' 20 जून से 23 जून 2013 तक होटल जयश्री,पत्निटाप, जम्मू में आयोजित किया जा रहा है, सम्पर्क करें:-अरूण आर्य-09419187171,09906088701

स्वामी रामवेश जी को गाड़ी भेंट

आर्य संन्यासी व वैदिक विद्वान स्वामी रामवेश जी को जीन्द में आयोजित समारोह में दिनांक 10 फरवरी 2013 को नयी क्वेटा गाड़ी भेंट की गई। इस अवसर पर स्वामी आर्य वेश जी, आचार्य देवराज शास्त्री, श्री वेदप्रकाश बेनीवाल, श्री रणधीर सिंह रेडु, ब्र.दीक्षेन्द आदि गणमान्य आर्य नेता उपस्थित थे। परिषद् की ओर से स्वामी जी को शुभकामनायें व उतम स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

आर्य कन्या गुरूकुल लुधियाना में प्रवेश प्रारम्भ

पजांब के एक मात्र ''आर्य कन्या गुरूकुल'' शास्त्री नगर, लुधियाना में प्रवेश प्रारम्भ है, इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें :-फोन:0161.2459563

।। ओ३म् ।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

के तत्वावधान में

189 वाँ महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

बृहस्पतिवार, 7 मार्च 2013 ❖ समय - प्रातः 10 से 2 बजे तक

स्थान : हिन्दी भवन सभागार

दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ., नई दिल्ली-110002

मुख्य अतिथि :

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा (नेता प्रतिपक्ष, दिल्ली विधानसभा)

श्री भगत सिंह कोशयारी (सांसद व पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड)

अध्यक्षता : **डॉ. अशोक कुमार चौहान** (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

ध्वजारोहण : **श्री मायाप्रकाश त्यागी** (कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

अभिनन्दन : **क0 तेजन्दरपाल त्यागी** (अध्यक्ष, राष्ट्रीय सैनिक संस्था)

मुख्य वक्ता : **आचार्य वागीश जी** (गुरूकुल एटा), **आचार्य गवेन्द्र शास्त्री**

डॉ. सुन्दरलाल कथुरिया (सुप्रसिद्ध साहित्यकर व लेखक), **श्री विजय गुप्त**

मधुर भजन : **आचार्य अंकित उपाध्याय व श्री प्रवीण आर्य**

विशिष्ट अतिथि

★ श्री दीपक भारद्वाज ★ श्री दर्शन अग्निहोत्री ★ श्री गोविन्दसिंह भण्डारी
★ श्री नवीन रहेजा ★ चौ. ब्रह्मप्रकाश मान ★ श्री राजीव कुमार 'परम'
★ श्री के.एस.यादव ★ श्री जितेन्द्र नरूला ★ श्री रवि चड्डा
★ श्री अरूण अग्रवाल ★ श्री सुरेन्द्र गुप्ता ★ श्री जितेन्द्र डावर
★ माता सुषमा सिंघल ★ श्री सत्यानन्द आर्य ★ डा.आर.के.आर्य

ऋषि लंगर : दोपहर 2.00 बजे

प्रबन्धक : यशोवीर आर्य, विश्वनाथ आर्य, संतोष शास्त्री, विमल कुमार

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

-: निवेदक :-

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष

आनन्द चौहान स्वागताध्यक्ष

महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री

सम्पर्क : 9810117464 E-mail:aryayouth@gmail.com

251 कुण्डीय यज्ञ का भव्य यज्ञ मंडप व श्री भगत सिंह कोशयारी का अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित 251 कुण्डीय विराट यज्ञ एवं अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन अशोक विहार, दिल्ली में सुन्दर 'यज्ञ मंडप' का दृश्य। द्वितीय चित्र में उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्य मन्त्री एवं सांसद श्री भगत सिंह कोशयारी का अभिनन्दन करते हुए आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य एवं श्री गोविन्द सिंह भण्डारी (एडवोकेट)

श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री हरिचन्द आर्य तथा स्व. श्री वेदप्रकाश चौधरी का अभिनन्दन

ब्र. योगीराज विश्वपाल जयन्त, श्री सत्यपाल गाँधी व माता स्वर्णा गुप्ता का अभिनन्दन

श्री रवि चड्डा प्रधान निर्वाचित

रविवार 24 फरवरी 2013, पश्चिम दिल्ली के आर्य समाज के प्रमुख संगठन 'वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली'' के चुनाव आर्य समाज, कीर्ति नगर में सम्पन्न हुए, जिसमें कर्मठ आर्य समाज सेवी, परिषद् के अपार सहयोगी श्री रवि चड्डा जी मण्डल के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। श्री वीरेन्द्र सरदाना को कार्यकर्त्ता प्रधान चुना गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् एवं आर्य यूथ ग्रुप की ओर से हार्दिक बधाई। उपरोक्त चित्र में श्रीमती एवं श्री रवि चड्डा को बधाई एवम् शुभकामनाएं देते हुए डॉ. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई जी, श्री राम कुमार सिंह, श्री सन्तोष शास्त्री, श्री दिनेश आर्य, कै. अशोक गुलाटी आदि।

आत्म शुद्धि आश्रम में योग साधना शिविर

पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी के पावन सान्निध्य व आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता में ''योग साधना शिविर'' दिनांक 18 मार्च से 24 मार्च 2013 तक आत्म शुद्विआश्रम, बहादुरगढ़, हरियाणा में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें :- 09416054195

आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत में उत्सव सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के तत्वावधान में वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन आर्य समाज, ऋषि नगर में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य उद्बोधन देते हुए। साथ में श्री मनोहर लाल चावला, श्री वेद प्रकाश आर्य आदि। कुशल मंच संचालन श्री हरि चंद स्नेही ने किया। श्री महेन्द्र भाई जी व श्री दिनेश आर्य भी उपस्थित थे।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल (धर्मपत्नि श्री राधाशरण अग्रवाल) का गत दिनों निधन हो गया।
2. श्रीमती विमला गम्भीर (आर्य समाज, रोहतास नगर, दिल्ली) का गत दिनों निधन हो गया।
3. श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित (धर्मपत्नि प्रो. शेरसिंह, पूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री भारत) का गत दिनों निधन हो गया।
4. श्री वेदप्रिय आर्य (करोल बाग) का गत दिनों निधन हो गया।
5. श्रीमती लक्ष्मी देवी (माता श्रीमती पुष्पलता वर्मा) विकासपुरी का दिनांक 28.02.2013 को निधन हो गया।
6. श्री सुदर्शन सिक्का (आर्य समाज पटेल नगर) का गत दिनों निधन हो गया।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970